श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ रसप्रबोध ।

दोहा मैं यह ग्रन्थ कौं कीन्हौं तिहि रसलीन ।
अपने मन की उक्ति सौं रचि रचि जुगुति नवीन ॥ १ ॥
नवहु रस कौं जब भयो यामैं बोध बनाइ ।
रसप्रबोध या ग्रन्थ कौ नाम धर्‌यौ तब ल्याइ ॥ २ ॥
सत्रहसै अट्ठानवे मधु सुदि छठ बुधवार ।
बिलगराम मैं आइ कै भयो ग्रन्थ अवतार ॥ ३ ॥
बाँचि आदि तें अन्त लौं यह समुझै जो कोइ ।
ताहि और रस ग्रन्थ की फेरि चाह नहिँ होइ ॥ ४ ॥
कविजन सौं रसलीन यह बिनती करत पुकारि ।
भूलि निहारि बिचारि कै दीजो ताहि सँवारि ॥ ५ ॥

अथ रसवर्णन—दोहा ।

बरन मङ्गलाचरण अरु कविकुल को अब आनि ।
रस कौं बरनन करत हौं ग्रन्थ मूल जिय जानि ॥ ६ ॥

अथ रसलक्षण ।

श्रवन सुनत रस सब्द कौं ग्रन्थन देख्यौ जाय ।
रस लच्छन तिनके मते समुझि पर्‌यौ यह आय ॥ ७ ॥